

Approved

कक्षा-9 हिंदी-उत्तरमाला

खंड-क : अपठित बोध

प्रश्न 1

(i) साहस का संबंध मुख्य रूप से किन गुणों से है?

उत्तर : (ख) मानसिक दृढ़ता और आत्मविश्वास से।

(ii) साहसी व्यक्ति कठिनाइयों को किस रूप में स्वीकार करता है?

उत्तर : (ग) चुनौती के रूप में।

(iii) सच्चा साहस कब दिखाई देता है?

उत्तर : सच्चा साहस तब दिखाई देता है जब व्यक्ति भय, असफलता और कठिन परिस्थितियों के सामने भी अपने लक्ष्य से विचलित नहीं होता तथा धैर्य और आत्मविश्वास के साथ आगे बढ़ता है।

(iv) साहसी व्यक्ति कठिनाइयों से क्या प्राप्त करता है?

उत्तर : साहसी व्यक्ति कठिनाइयों से सीख और अनुभव प्राप्त करता है। वह कठिन परिस्थितियों को चुनौती मानकर उनसे कुछ नया सीखता है और भविष्य में अधिक दृढ़ होकर आगे बढ़ता है।

(v) गद्यांश के आधार पर साहस की परिभाषा अपने शब्दों में लिखिए।

उत्तर : साहस केवल शारीरिक शक्ति का प्रदर्शन करना नहीं है। कठिन परिस्थितियों, भय और असफलताओं के सामने भी धैर्य बनाए रखना, सही निर्णय लेना, सत्य के पक्ष में खड़े रहना और अपने लक्ष्य की ओर निरंतर बढ़ते रहना ही वास्तविक साहस है। साहस के लिए मानसिक दृढ़ता, आत्मविश्वास और संघर्ष करने की क्षमता आवश्यक होती है।

(vi) कथन (A) और कारण (R)

उत्तर : (घ) (A) और (R) दोनों गलत हैं।

व्याख्या : गद्यांश में स्पष्ट किया गया है कि साहस केवल युद्ध के मैदान में दिखाई देने वाला गुण नहीं है। यह कठिन परिस्थितियों में सही निर्णय लेने और सत्य के पक्ष में खड़े होने की शक्ति भी है। इसी

सो.प्र.
17/09/26

विशाल कुमार
17.09.2026

प्रकार साहस केवल शारीरिक शक्ति से संबंधित नहीं, बल्कि मानसिक दृढ़ता और आत्मविश्वास से भी संबंधित है।

प्रश्न 2 — पद्यांश

(i) नदी किसका प्रतीक है?

उत्तर : (ख) निरंतर यात्रा।

(ii) नदी अपने साथ क्या लेकर चलती है?

उत्तर : नदी अपने साथ जीवन, हरियाली और समृद्धि लेकर चलती है।

(iii) नदी मनुष्य को किस प्रकार की प्रेरणा देती है?

उत्तर : नदी मनुष्य को निरंतर आगे बढ़ने, बाधाओं को पार करने तथा दूसरों के जीवन को समृद्ध बनाने की प्रेरणा देती है।

(iv) नदी की पुकार से क्या आशय हो सकता है?

उत्तर : नदी की पुकार से आशय मनुष्य को यह संदेश देना है कि वह जीवन में निरंतर आगे बढ़े, बाधाओं से न घबराए और अपने अस्तित्व से दूसरों के जीवन में भी सुख, विकास तथा समृद्धि लाए।

(v) नदी और मनुष्य के जीवन में क्या समानता दिखाई देती है?

उत्तर : नदी और मनुष्य दोनों का जीवन निरंतर गतिशील है। जिस प्रकार नदी पर्वतों से निकलकर अनेक बाधाओं को पार करती हुई आगे बढ़ती है, उसी प्रकार मनुष्य भी जीवन में अनेक कठिनाइयों और बाधाओं का सामना करते हुए अपने लक्ष्य की ओर बढ़ता है। नदी की गति मनुष्य को संघर्ष और निरंतर प्रगति की प्रेरणा देती है।

खंड-ख : व्यावहारिक व्याकरण

प्रश्न-3

(i) 'साहस' का विलोम

उत्तर : (ख) कायरता

(ii) 'उत्साह' का निकटतम अर्थ

उत्तर : (ख) उमंग

विश्वनाथ

(iii) 'नदी' का पर्यायवाची

उत्तर : (क) सरिता

(iv) 'उत्तम' का विलोम

उत्तर : (ग) अधम

प्रश्न-4

बिश्मिल

(i) 'व्याकरण' पाठ के संदर्भ में बताइए कि चंद्र को भाषा से क्या शिकायत है?

उत्तर : व्याकरणचंद्र को भाषा से शिकायत थी कि लोग उसका सही और शुद्ध रूप से प्रयोग नहीं करते। वे व्याकरण के नियमों का ध्यान न रखकर मनमाने ढंग से बोलते और लिखते हैं। लोग संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया और क्रियाविशेषण आदि का उचित प्रयोग नहीं करते, जिससे भाषा अशुद्ध हो जाती है। भाषा ने भी माना कि संज्ञा और क्रिया का सही मेल न होने के कारण कई बार अर्थ समझने में कठिनाई होती है। व्याकरणचंद्र चाहते थे कि लोग नियमों का पालन करें और भाषा को शुद्ध, संस्कारी तथा सुंदर बनाएँ। उन्हें इस बात का दुख था कि लोग भाषा की गरिमा को समझने के बजाय उसकी गलतियाँ करते रहते हैं।

(ii) भाषा के शुद्ध और प्रभावशाली प्रयोग में व्याकरण की क्या भूमिका है?

उत्तर : व्याकरण भाषा को शुद्ध, व्यवस्थित और स्पष्ट बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। इसके माध्यम से शब्दों, वाक्यों तथा उनके प्रयोग के सही नियमों का ज्ञान होता है। सही व्याकरण के कारण विचार स्पष्ट रूप से व्यक्त होते हैं और भाषा अधिक प्रभावशाली बनती है। व्याकरण की शुद्धता से भाषा में अर्थ की अस्पष्टता और भ्रम कम होता है।

प्रश्न-5 तत्सम-तद्भव

(i) चंद्र

तत्सम — चंद्र

तद्भव — चाँद

(ii) मुख

तत्सम — मुख

तद्भव — मुँह

प्रश्न-6 उपसर्ग/प्रत्यय

(i) उत्साहित

उत्तर : उत् + साह + इत

इस शब्द में 'उत्' उपसर्ग तथा 'इत' प्रत्यय माना जा सकता है।

(ii) संवेदनशीलता

उत्तर : संवेदनशील + ता

इसमें 'ता' प्रत्यय है।

प्रश्न-7 वाक्य परिवर्तन

(i) नदी निरंतर बहती है।

विशेषण का प्रयोग करते हुए :

उत्तर : नदी निरंतर बहने वाली गतिशील धारा है।

(ii) साहसी व्यक्ति कठिनाइयों से नहीं डरता।

नकारात्मक वाक्य में : यह वाक्य पहले से ही नकारात्मक है क्योंकि इसमें 'नहीं' का प्रयोग हुआ है।

उत्तर : साहसी व्यक्ति कठिनाइयों से नहीं डरता।

(iii) रानी गाइदिनल्यू ने संघर्ष किया।

प्रश्नवाचक वाक्य :

उत्तर : क्या रानी गाइदिनल्यू ने संघर्ष किया?

(iv) वह उत्साहपूर्वक कार्य करता है।

क्रिया-विशेषण :

उत्तर : 'उत्साहपूर्वक' क्रिया-विशेषण है। यह बताता है कि वह किस प्रकार कार्य करता है।

बिश्वाकष

खंड-ग : पाठ्यपुस्तक

प्रश्न-8 बहुविकल्पीय प्रश्न

(i) 'भाई-बहन' पाठ में साहस का क्या अर्थ है?

उत्तर : (ग) कठिन परिस्थितियों का दृढ़ता से सामना करना।

(ii) उत्साह किसे कहते हैं?

उत्तर : (ख) किसी कार्य के प्रति उमंग और तत्परता को।

(iii) 'रहीम के दोहे' में चंदन और भुजंग किसका प्रतीक हैं?

उत्तर : (ख) सज्जनता और दुष्टता।

(iv) 'नदी' कविता में नदी किस ओर संकेत करती है?

उत्तर : (क) जीवन की गतिशीलता की ओर।

(v) रानी गाइदिल्लू किस गुण के लिए विशेष रूप से स्मरणीय हैं?

उत्तर : (ख) साहस और संघर्ष।

प्रश्न-9 30-40 शब्द

(i) 'उत्साह' किसे कहते हैं? अपने शब्दों में समझाइए।

उत्तर : उत्साह किसी कार्य को करने की तीव्र इच्छा, उमंग और तत्परता का भाव है। उत्साहित व्यक्ति कठिनाइयों से घबराए बिना पूरे मन और ऊर्जा के साथ अपने कार्य को पूरा करने का प्रयास करता है।

(ii) बसवन्ना की कविताओं से आप क्या शिक्षा ग्रहण करते हैं?

उत्तर : 'नमन करूँ मैं' कविता में कवि ने अनेक महत्वपूर्ण जीवन-मूल्यों की बात की है। इसमें देश-प्रेम और राष्ट्र के प्रति सम्मान को सबसे अधिक महत्त्व दिया गया है। कवि भारत की एकता, प्रेम, शांति और भाईचारे की भावना की प्रशंसा करता है। कविता हमें सत्य के मार्ग पर चलने, न्याय के लिए संघर्ष करने और आवश्यकता पड़ने पर अपने प्राणों का बलिदान देने की प्रेरणा देती है। इसमें मानवता, साहस, त्याग और निडरता जैसे गुणों को अपनाने का संदेश मिलता है। हमें देश की संस्कृति और महान आदर्शों का सम्मान करते हुए मिल-जुलकर देश की प्रगति में योगदान देना चाहिए।

विशाल

(iii) भक्ति का स्वरूप कैसा होता है?

उत्तर : भक्ति ईश्वर के प्रति प्रेम, श्रद्धा और समर्पण की भावना है। सच्ची भक्ति केवल बाहरी आडंबरों पर आधारित नहीं होती, बल्कि मन की पवित्रता, विश्वास, विनम्रता और अच्छे कर्मों से प्रकट होती है। भक्त अपने आराध्य के प्रति पूर्ण विश्वास रखता है।

(iv) 'रहीम के दोहे' में चंदन और भुजंग के माध्यम से कौन-सी नैतिक शिक्षा दी गई है?

उत्तर : चंदन और भुजंग के माध्यम से यह शिक्षा मिलती है कि सज्जन व्यक्ति का स्वभाव बुरा संग मिलने से आसानी से नहीं बदलता। जैसे चंदन के पेड़ से लिपटे रहने पर भी साँप का विष चंदन को विषैला नहीं बनाता, वैसे ही अच्छे व्यक्ति को अपने सद्गुण बनाए रखने चाहिए।

(v) कविता 'नदी' में नदी की पुकार से कवि का क्या आशय है?

उत्तर : नदी की पुकार मनुष्य को जीवन की गतिशीलता और निरंतर आगे बढ़ने का संदेश देती है। नदी बाधाओं को पार करते हुए आगे बढ़ती है और अपने साथ जीवन, हरियाली तथा समृद्धि लेकर चलती है। इसी प्रकार मनुष्य को भी संघर्ष करते हुए आगे बढ़ना चाहिए।

प्रश्न-10 50-60 शब्द

(i) 'भाई-बहन' कहानी से आप क्या शिक्षा ग्रहण करते हैं?

उत्तर : 'भाई-बहन' कहानी से हमें भाई-बहन के प्रेम, त्याग, समझदारी, संतोष और सहयोग की शिक्षा मिलती है। सुंदर अपनी बहन की इच्छाओं का सम्मान करता है और उसे अपनी खुशी में शामिल करना चाहता है। कहानी यह भी सिखाती है कि हमें अपनी इच्छाओं को सीमित रखना चाहिए और धन का दिखावा नहीं करना चाहिए। हमें दूसरों की भावनाओं को समझना तथा जरूरतमंदों की सहायता करना चाहिए। अपने देश और देश में बने सामान के प्रति सम्मान रखना भी हमारा कर्तव्य है। भाई-बहन को एक-दूसरे का साथ देना चाहिए और कठिन परिस्थितियों में धैर्य तथा समझदारी से काम लेना चाहिए।

(ii) सिरचन के चरित्र में निहित आत्म-सम्मान और संवेदनशीलता की भावना को उदाहरण सहित व्याख्यायित कीजिए।

उत्तर : सिरचन स्वाभिमानी और संवेदनशील व्यक्ति है। वह अपने काम का उचित सम्मान चाहता है और अपमानित होकर काम करना स्वीकार नहीं करता। एक बार जब उसे काम के बदले उचित व्यवहार और सम्मान नहीं मिलता, तो वह काम छोड़ देता है। साथ ही, वह दूसरों की भावनाओं को समझता है और

आत्मीयता से काम करता है। उसकी कला में प्रेम और संवेदना झलकती है। इस प्रकार उसका आत्मसम्मान और संवेदनशील हृदय उसके चरित्र को विशिष्ट बनाते हैं।

(iii) 'नीति वचन' में आई विसंगतियों को अपनी भाषा में विस्तार से समझाइए।

उत्तर : इस नीति वचन में जीवन-व्यवहार से जुड़ी कई विसंगतियाँ दिखाई देती हैं। इसमें कहा गया है कि जहाँ अपना सम्मान न हो, वहाँ नहीं जाना चाहिए, लेकिन दूसरी ओर व्यक्ति को अपनी प्रतिष्ठा और स्वाभिमान के विपरीत परिस्थितियों में भी लाभ-हानि देखकर व्यवहार करते दिखाया गया है। गधे को घोड़े पर दागी लगाने और कौए को बाज के स्थान पर रखने जैसी बातें सामाजिक व्यवस्था की विडम्बना को उजागर करती हैं। कवि व्यंग्य के माध्यम से अनुचित, असंगत और दिखावटी व्यवहार पर प्रहार करता है।

विशाल

प्रश्न-11

(i) 'व्याकरण' पाठ के संदर्भ में चंद्र की भाषा संबंधी शिकायत क्या है?

उत्तर : व्याकरणचंद्र को भाषा से शिकायत थी कि लोग उसका सही और शुद्ध रूप से प्रयोग नहीं करते। वे व्याकरण के नियमों का ध्यान न रखकर मनमाने ढंग से बोलते और लिखते हैं। लोग संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया और क्रियाविशेषण आदि का उचित प्रयोग नहीं करते, जिससे भाषा अशुद्ध हो जाती है। भाषा ने भी माना कि संज्ञा और क्रिया का सही मेल न होने के कारण कई बार अर्थ समझने में कठिनाई होती है। व्याकरणचंद्र चाहते थे कि लोग नियमों का पालन करें और भाषा को शुद्ध, संस्कारी तथा सुंदर बनाएँ। उन्हें इस बात का दुख था कि लोग भाषा की गरिमा को समझने के बजाय उसकी गलतियाँ करते रहते हैं।

(ii) नमन करूँ कविता में कवि ने किन जीवन मूल्यों की बात की है।

उत्तर : नमन करूँ मैं' कविता में कवि ने अनेक जीवन-मूल्यों को महत्त्व दिया है। इनमें देशप्रेम, एकता, अखंडता, प्रेम, शांति, सत्य, न्याय, धर्म, साहस और मानवता प्रमुख हैं। कवि ऐसे मनुष्य को आदर्श मानता है जो सत्य के मार्ग पर दृढ़ता से चलता है, न्याय के लिए अपने प्राण तक अर्पित करने को तैयार रहता है और मानवता की रक्षा करता है। कविता हमें देश की संस्कृति और मातृभूमि के प्रति सम्मान रखने, भेदभाव मिटाने तथा मिल-जुलकर रहने की प्रेरणा देती है।

प्रश्न-12 80-100 शब्द

(क) रानी माँ गाइदिन्ल्यू का चरित्र-चित्रण

उत्तर : रानी माँ गाइदिन्ल्यू एक साहसी, देशभक्त, दृढ़निश्चयी और स्वाभिमानी महिला थीं। उन्होंने मात्र तेरह वर्ष की आयु में अंग्रेजों के विरुद्ध संघर्ष का मार्ग अपनाया। वे अपने चचेरे भाई हाइपाउ जदोनांग से बहुत प्रभावित थीं और उनके हेराका आंदोलन से जुड़कर नागा संस्कृति तथा धर्म की रक्षा के लिए कार्य किया। जदोनांग की मृत्यु के बाद उन्होंने आंदोलन का नेतृत्व सँभाला और अंग्रेजी शासन का डटकर विरोध किया। कठिन परिस्थितियों, गिरफ्तारी और लंबे कारावास के बावजूद उन्होंने हार नहीं मानी। वे अपनी संस्कृति, परंपराओं और लोगों की पहचान की रक्षा के लिए जीवनभर संघर्ष करती रहीं। उनका जीवन साहस, त्याग, नेतृत्व, आत्मसम्मान और देशप्रेम का प्रेरणादायक उदाहरण है।

अथवा

विशाल

(ख) नीम का पेड़ प्रकृति की किन शक्तियों का परिचायक है?

उत्तर : नीम का पेड़ प्रकृति की अनेक शक्तियों का परिचायक है। इसकी पत्तियाँ, फूल, छाल और फल मनुष्य के लिए बहुत उपयोगी हैं। नीम की पत्तियों में औषधीय गुण पाए जाते हैं, इसलिए इनका उपयोग अनेक रोगों के उपचार में किया जाता है। इसकी घनी हरी पत्तियाँ गर्मी में शीतल छाया प्रदान करती हैं और वातावरण को स्वच्छ बनाने में सहायता करती हैं। नीम का पेड़ कठिन परिस्थितियों में भी जीवित रहकर प्रकृति की सहनशक्ति और जीवन-शक्ति को दर्शाता है। इसकी पत्तियाँ हवा में लहराकर मानो आशाओं का संदेश देती हैं। कवि के लिए नीम केवल एक पेड़ नहीं, बल्कि बचपन की यादों, परिवार, स्वास्थ्य, आश्रय और प्रकृति के प्रेम का प्रतीक है। इस प्रकार नीम प्रकृति की सुंदरता, उपयोगिता, ममता और जीवनदायिनी शक्ति का परिचायक है।

प्रश्न-13

(i) केरल स्कूल ऑफ एस्ट्रोनॉमी एंड मैथमेटिक्स का संस्थापक किसे माना जाता है?

उत्तर : केरल स्कूल ऑफ एस्ट्रोनॉमी एंड मैथमेटिक्स के संस्थापक संगमग्राम माधव हैं।

(ii) वेलु नाचियार कौन थीं?

उत्तर : वेलु नाचियार (1730-1796) शिवगंगा रियासत की शासिका थीं। उन्हें भारत की पहली ऐसी रानी माना जाता है; जिसने अंग्रेज ईस्ट इंडिया कंपनी के विरुद्ध संगठित युद्ध किया। तमिल लोग उन्हें गर्व से 'वीरमंगई' यानी बहादुर महिला कहते हैं।

(iii) संगम साहित्य किस कवि की रचना है और उसकी क्या विशेषता है?

उत्तर : संगम साहित्य कवि कपिलर की रचना है। संगम साहित्यिक में 206 कविताएँ, जिनमें प्रकृति और मानव-मन दोनों का सूक्ष्म चित्रण मिलता है। इन्ना नरपतु संगम साहित्य की प्रसिद्ध शिक्षापद कृति है। उनकी रचनाएँ न केवल उस युग की सामाजिक और सांस्कृतिक झलक देती हैं, बल्कि आज भी साहित्य और काव्य-रचना के लिए प्रेरणा स्रोत हैं।

(iv) 'पहाड़ों की रानी माँ गाइदिनल्यू' पाठ से आपको क्या प्रेरणा मिलती है?

उत्तर : इस पाठ से हमें साहस, आत्मसम्मान, संघर्ष, दृढ़ निश्चय और अपने अधिकारों के लिए खड़े होने की प्रेरणा मिलती है। कठिन परिस्थितियों में हार मानने के बजाय उनका साहसपूर्वक सामना करना चाहिए। रानी गाइदिनल्यू का जीवन हमें अपने लक्ष्य के प्रति ईमानदार और दृढ़ रहने की सीख देता है।

प्रश्न-14 सप्रसंग व्याख्या

(क) रहीम का दोहा

“जो रहीम उत्तम प्रकृति, का करि सकत कुसंग।

चंदन विष व्यापत नहीं, लिपटे रहत भुजंग।”

प्रसंग : यह दोहा रहीम के नीति संबंधी दोहों में से है। इसमें रहीम ने अच्छे स्वभाव वाले व्यक्ति की विशेषता बताते हुए उसके ऊपर बुरी संगति के प्रभाव को समझाया है।

व्याख्या : रहीम कहते हैं कि जिस व्यक्ति का स्वभाव मूल रूप से उत्तम और सद्गुणों से युक्त होता है, उस पर बुरी संगति का आसानी से प्रभाव नहीं पड़ता। इसके लिए कवि चंदन के पेड़ का उदाहरण देते हैं। चंदन के पेड़ से साँप लिपटे रहते हैं और साँप विषैला होता है, लेकिन उसके विष के कारण चंदन विषैला नहीं हो जाता। उसी प्रकार सज्जन व्यक्ति को भी बुरे लोगों की संगति में रहते हुए अपने अच्छे गुणों को नहीं छोड़ना चाहिए।

अथवा

(ख) बिखरे हुए दूध-सी बहती नदी के पास

नाव और पतवार लेकर बैठ हूँ मैं

बचपन में कितनी बार

दोस्तों के साथ इसमें डुबकी लगाई है

बारिश में तटों को तोड़कर

विशाल

इसे बहते देखा है।

प्रसंग : प्रस्तुत पंक्तियाँ 'नदी' नामक कविता से ली गई हैं। कवि ने इन पंक्तियों में नदी के साथ अपने गहरे संबंध और बचपन की स्मृतियों का वर्णन किया है।

व्याख्या : कवि कहता है कि नदी दुखी व्यक्ति की तरह निरंतर बह रही है। उसके किनारे कवि नाव और पतवार लेकर बैठा है। उसे अपना बचपन याद आता है, जब उसने अपने मित्रों के साथ नदी में कई बार डुबकी लगाकर स्नान किया था। बरसात के दिनों में नदी का जल बढ़ जाने पर वह उसके तेज बहाव को भी देखता रहा है। इन पंक्तियों में कवि ने नदी के प्रति अपने प्रेम, बचपन की मधुर स्मृतियों और प्रकृति के प्रति लगाव को सुंदर ढंग से व्यक्त किया है।

प्रश्न-15 100-120 शब्द

(क) ठेस कहानी हमें जीवन में किन मानवीय गुणों को अपनाने की प्रेरणा देती है? क्या आप उन गुणों को अपने जीवन में अपनाना चाहते हैं? कैसे?

उत्तर : 'ठेस' कहानी हमें अनेक मानवीय गुणों को अपनाने की प्रेरणा देती है। इस कहानी के माध्यम से मेहनत, स्वाभिमान, आत्मसम्मान, संवेदनशीलता, सहयोग, सरलता और दूसरों की भावनाओं का सम्मान करने का संदेश मिलता है। सिरचन एक कुशल कारीगर है और अपने काम को पूरी लगन तथा ईमानदारी से करता है। वह मेहनत का उचित सम्मान चाहता है। जब उसके साथ उपेक्षा और अपमान का व्यवहार होता है, तो उसे बहुत ठेस पहुँचती है। कहानी यह भी सिखाती है कि किसी व्यक्ति की आर्थिक या सामाजिक स्थिति देखकर उसके साथ भेदभाव नहीं करना चाहिए।

हाँ, हमें इन गुणों को अपने जीवन में अवश्य अपनाना चाहिए। हमें प्रत्येक व्यक्ति का सम्मान करना चाहिए, चाहे वह छोटा हो या बड़ा। हमें अपने काम को ईमानदारी और लगन से करना चाहिए तथा दूसरों की भावनाओं को समझना चाहिए। किसी के परिश्रम का मज़ाक न उड़ाकर उसकी प्रशंसा और उचित सम्मान करना चाहिए। इससे समाज में प्रेम, समानता और सहयोग की भावना बढ़ेगी।

अथवा

(ख) रोंगमेई जनजाति के बारे में बताइए। इसकी क्या विशेषताएँ हैं?

उत्तर : गाइदिनल्यू जिस रोंगमेई जनजाति से संबंध रखती थीं, वह एक बड़े जनजातीय समूह का हिस्सा थी। नागालैंड में जेजियानग्रोंग नाम का समूह है, जिससे संबंधित लोग नागालैंड, मणिपुर और असम में निवास करते हैं। यह समूह वास्तव में कई जनजातियों के पहले शब्दों के संयोजन से बना है। इसमें जेमे, लियांगमाई, रोंगमेई और इनपुई जनजातियाँ शामिल हैं।

विशाल

खंड-घ : सृजनात्मक लेखन

प्रश्न-16 अनुच्छेद लेखन

(क) साहस और आत्मविश्वास : सफलता की पहली सीढ़ी

विशाल

उत्तर : साहस और आत्मविश्वास जीवन में सफलता प्राप्त करने के लिए अत्यंत आवश्यक गुण हैं। जब व्यक्ति अपने ऊपर विश्वास करता है, तब वह कठिन से कठिन परिस्थितियों का सामना करने में सक्षम होता है। केवल प्रतिभा या ज्ञान से सफलता प्राप्त नहीं होती, बल्कि असफलताओं के बाद दोबारा प्रयास करने का साहस भी होना चाहिए। आत्मविश्वास व्यक्ति को अपनी क्षमताओं को पहचानने और उनका सही उपयोग करने की प्रेरणा देता है। जीवन में अनेक बाधाएँ आती हैं, लेकिन साहसी व्यक्ति उनसे घबराकर पीछे नहीं हटता। वह गलतियों से सीखता है और आगे बढ़ता रहता है। इसलिए साहस हमें संघर्ष करना सिखाता है और आत्मविश्वास हमें सफलता की दिशा में आगे बढ़ने की शक्ति देता है। दोनों मिलकर सफलता की पहली सीढ़ी बनते हैं।

(ख) नदियाँ और हमारा जीवन

उत्तर : नदियाँ हमारे जीवन का महत्वपूर्ण आधार हैं। वे केवल जल का स्रोत नहीं हैं, बल्कि कृषि, पेयजल, उद्योग और पर्यावरण के लिए भी अत्यंत आवश्यक हैं। नदियों के कारण भूमि उपजाऊ होती है और अनेक क्षेत्रों में हरियाली बनी रहती है। नदी निरंतर बहते हुए हमें आगे बढ़ने की प्रेरणा भी देती है। लेकिन आज प्रदूषण, प्लास्टिक, औद्योगिक कचरे और जल के अत्यधिक दोहन के कारण अनेक नदियाँ संकट में हैं। यदि नदियाँ प्रदूषित और सूख जाएँगी, तो इसका सीधा प्रभाव मनुष्य, पशु-पक्षियों और पर्यावरण पर पड़ेगा। इसलिए हमें नदियों में कचरा नहीं डालना चाहिए, जल का संरक्षण करना चाहिए और नदी-तटों को स्वच्छ रखना चाहिए। नदियों की रक्षा वास्तव में हमारे भविष्य की रक्षा है।

(ग) प्रकृति संरक्षण : आज की आवश्यकता

उत्तर : प्रकृति हमारे जीवन का आधार है। हमें वायु, जल, भोजन, पेड़-पौधे और अनेक प्राकृतिक संसाधन प्रकृति से प्राप्त होते हैं। लेकिन बढ़ते प्रदूषण, वनों की कटाई, प्लास्टिक के अत्यधिक उपयोग और प्राकृतिक संसाधनों के अंधाधुंध दोहन से पर्यावरण को गंभीर नुकसान हो रहा है। इसका प्रभाव मनुष्य और अन्य जीव-जंतुओं पर भी पड़ रहा है। इसलिए प्रकृति का संरक्षण आज की सबसे बड़ी आवश्यकताओं में से एक है। हमें अधिक से अधिक पेड़ लगाने चाहिए, जल की बचत करनी चाहिए, प्लास्टिक का उपयोग कम करना चाहिए और अपने आसपास स्वच्छता बनाए रखनी चाहिए। सरकार के साथ-साथ

प्रत्येक नागरिक की जिम्मेदारी है कि वह पर्यावरण की रक्षा में योगदान दे। प्रकृति सुरक्षित होगी तभी हमारा भविष्य सुरक्षित रहेगा।

प्रश्न-17

(क) हिंदी साहित्यिक क्लब शुरू करने के लिए प्रधानाचार्य को आवेदन-पत्र सेवा में,

प्रधानाचार्य महोदय/महोदया

_____ विद्यालय

विषय : विद्यालय में हिंदी साहित्यिक क्लब प्रारंभ करने हेतु आवेदन-पत्र।

विशाल

महोदय/महोदया,

सविनय निवेदन है कि हमारे विद्यालय में हिंदी साहित्य के प्रति विद्यार्थियों की रुचि बढ़ाने तथा उनकी रचनात्मक एवं भाषाई प्रतिभा को विकसित करने के लिए एक हिंदी साहित्यिक क्लब प्रारंभ किया जाना चाहिए।

इस क्लब के माध्यम से कविता-पाठ, कहानी-लेखन, निबंध-लेखन, वाद-विवाद, भाषण, पुस्तक-चर्चा, प्रश्नोत्तरी तथा साहित्यिक प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जा सकता है। इससे विद्यार्थियों में हिंदी भाषा के प्रति रुचि बढ़ेगी और उनमें आत्मविश्वास, कल्पनाशक्ति तथा अभिव्यक्ति-कौशल का विकास होगा।

अतः आपसे विनम्र अनुरोध है कि विद्यालय में हिंदी साहित्यिक क्लब प्रारंभ करने की अनुमति प्रदान करने की कृपा करें।

धन्यवाद।

भवदीय

नाम : _____

कक्षा : 9

अनुक्रमांक : ____

दिनांक : ____

अथवा

(ख) सूचना/पोस्टर — “जल संरक्षण और नदी बचाओ”

जल संरक्षण और नदी बचाओ

“जल है तो कल है — “नदी है तो जीवन है!”

जल हमारे जीवन का आधार है। नदियाँ हमें जल, हरियाली और जीवन प्रदान करती हैं। आज प्रदूषण, प्लास्टिक और जल के अत्यधिक दोहन के कारण हमारी नदियाँ संकट में हैं।

- आइए, हम संकल्प लें—
- नदियों में कूड़ा-कचरा नहीं डालेंगे।
- प्लास्टिक का उपयोग कम करेंगे।
- पानी को व्यर्थ नहीं बहाएँगे।
- वर्षा जल का संरक्षण करेंगे।
- नदी और जलस्रोतों के आसपास स्वच्छता रखेंगे।
- दूसरों को भी जल संरक्षण के लिए जागरूक करेंगे।

आज जल बचाएँ, कल जीवन बचाएँ!

जल बचाएँ ● नदी बचाएँ ● प्रकृति बचाएँ ● भविष्य बचाएँ

आयोजक :

हिंदी साहित्यिक क्लब/पर्यावरण क्लब

_____ विद्यालय

विश्वकाम

५